www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक पत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 21 रोहतक, 28 अक्तूबर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

देश के चार महान् राजनीतिज्ञ

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

जब हम अपने प्यारे देश भारत के अतीत का उज्ज्वल इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें चार महान् राजनीतिज्ञों का दिग्दर्शन होता है जो भारत के नभ-मण्डल में अपनी तेजस्विता के कारण देदीप्यमान है। उनके नाम हैं—(1) योगिराज श्रीकृष्ण, (2) आचार्य चाणक्य, (3) महाराजा शेर शिवाजी, (4) लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल। इन चारों का यहाँ पर संक्षिप्त परिचय देने जा रहे हैं, जो इसी भांति हैं।

(1) योगिराज श्रीकृष्ण—ये एक महान् योद्धा, बलवान, कुशाग्र बुद्धिमान्, साहसी व परम धैर्यवान् तो थे ही साथ ही एक महान् राजनीतिज्ञ भी थे। महाभारत में कौरवों की तरफ महान् योद्धा दादा भीष्म, महारथी गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे महारथी होने के बाद तथा साथ ही एक विशाल ग्यारह अक्षौहिणी सेना के होने पर भी भगवान् श्रीकृष्ण की कुशल राजनीति ही थी जिसके कारण पाण्डवों का कमजोर पक्ष होते हुए भी उनको विजय दिलवाई। इस विजय का पूरा श्रेय योगिराज श्रीकृष्ण जी को जाता है। महाभारत में एक नहीं अनेक ऐसे स्थल आते हैं, यदि उस समय श्रीकृष्ण अपनी बुद्धिमत्ता न दिखाते तो पाण्डवों का विजयी होना असंभव ही था। कर्ण, अर्जुन से हर बात में अधिक बलशाली था। उसका रथ कीचड़ में फंस जाने पर कर्ण को मारने का संकेत देना, अर्जुन द्वारा जयद्रथ को सूर्य छिपने से पहले मारने की प्रतिज्ञा को सफल बनाना, दादा भीष्म व गुरु द्रोणाचार्य को मारने की युक्ति बताना, दुर्योधन की जांघ पर भीम द्वारा प्रहार करवाना आदि सामयिक कार्य करवाना श्रीकृष्ण की ही बुद्धिमत्ता थी जिसके कारण पाण्डवों को विजय प्राप्त हुई। श्रीकृष्ण एक अद्वितीय महापुरुष थे, उनमें आपत्तियों से निकलने की अद्भुत क्षमता थी जिसके कारण वे हारी बाजी को जीत लेते थे। वे वेदों के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे, तभी तो वे गीता ज्ञान देकर अर्जुन का मोह भंग करवाकर युद्ध के लिए तैयार कर सके। योगिराज श्रीकृष्ण का धर्म, अन्य धर्माधिकारियों की तरह **'अहिंसा परमो धर्मः'** वाला धर्म नहीं था। इनका धर्म, पापियों, दुष्टों को छल-बल आदि किसी भी प्रकार मार देना ही धर्म था। उनका कहना था कि जो पापी का साथ देता है, वह भी पापी है, उनको मारना भी धर्म है, इसीलिए दुर्योधन पापी का साथ देने वाले दादा भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे लोगों को पापी समझकर ही मरवाया। श्रीकृष्ण की राजनीति केवल सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है।

(2) आचार्य चाणक्य—भारत के इतिहास में राजनीति में दूसरा स्थान आता है आचार्य चाणक्य का। ये भी एक विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। जब अवध का अन्यायी राजा महानन्द ने अपने मन्त्री चाणक्य का अपमान करके उसको अपने महल से निकाल दिया। तब महापण्डित चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं महानन्द के इतने बड़े साम्राज्य को नष्ट करके ही दम लूँगा और उसने वैसा ही कर दिखाया। चाणक्य एक बड़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। जब उसने राजमहल के बाहर ही महाराजा की दईया मूरी का एक होनहार लड़का जिसका नाम चन्द्रगुप्त था, अपने साथियों के साथ खेल रहा था और वह राजा का पार्ट लेकर खेल रहा था। चाणक्य की दूरदर्शित बुद्धि ने जान लिया कि यह बालक विलक्षण बुद्धि का है, यदि इसको शस्त्रविद्या सिखा दी जाये तो इसके द्वारा मैं महानन्द का परास्त कर सकता हूँ और ऐसा ही करके चन्द्रगुप्त द्वारा महानन्द को परास्त किया और उसके साम्राज्य का विनाश करके चन्द्रगुप्त को सम्राट बना दिया और स्वयं अवध राज्य का महामन्त्री बनकर जंगल में एक कुटिया में एक तपस्वी जीवन बनाकर रहने लगा। उसी कुटिया में रहकर पूरे साम्राज्य की देखभाल करने लगा। राज्य की व्यवस्था इतनी बढ़िया व सुदृढ़ थी कि कोई भी राजा चन्द्रगुप्त के राज्य की तरफ आँख उठाकर देखने का भी दुस्साहस नहीं कर सकता था। चाणक्य ने एक चाणक्य-नीति पुस्तक भी लिखी जिसको पढ़कर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं। चाणक्य जैसा बुद्धिमान्, राजनीतिज्ञ, चरित्रवान् व राष्ट्रहित के प्रति समर्पित भाव वाले व्यक्ति भारत के इतिहास में ढूंढ़ने से भी बहुत कम मिलते हैं। उसके महामन्त्री काल में जनता पूर्ण सुखी व आनन्दित थी। कहा जाता है कि जिस राज्य का मंत्री जंगल में कुटिया बनाकर रहेगा, तो उसकी जनता महलों में आनन्द की नींद सोवेगी और जिस राज्य का मन्त्री महलों में ऐश करेगा, उसकी जनता झोंपड़ियों में रहकर दुःखी जीवन व्यतीत करेगी। इस बात को चाणक्य ने चरितार्थ करके दिखा दिया। आज के शासक व मन्त्री महलों में व फाइव-स्टार होटलों में रहते हैं, तभी आज की जनता दुःखी है। उन्हें आतंकवादियों का भय और महंगाई की मार सहनी पड़ रही है। उनको चाणक्य के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

(3) शेर शिवाजी—भारत के इतिहास में राजनीति के क्षेत्र में शेर शिवाजी महाराज का भी एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे भी एक अद्वितीय साहसी और विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इसीलिए वे एक साधारण छोटे से राज्य के राजा होकर, औरंगजेब जैसे अन्यायी, बड़े राज्य से टक्कर लेने में सफल हो सके। उसकी माता जीजाबाई एक धार्मिक एवं राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत भाव की विदुषी महिला थी जिसने अपने पुत्र शिवा को बचपन में ही अच्छी-अच्छी धार्मिक व वीरता की कहानियाँ सुना-सुनाकर उसे एक देशभक्त राजा बना दिया। शिवाजी अपनी गतिविधियों से औरंगजेब की नींद हराम कर रखी थी। औरंगजेब उसे पकड़ने की जितनी भी चालें चलता था, शिवाजी उन्हें निष्फल कर देता था और उसकी पकड़ में नहीं आता था। एक बार औरंगजेब ने अफजल खाँ को शिवाजी से सन्धि करने भेजा, यह भी उसकी चालाकी थी जिसे शिवाजी ने नाकाम कर दिया और अफजल खाँ के चंगुल से निकल गया। एक बार शिवाजी औरंगजेब की पकड़ में आगया और उसे जेल में डाल दिया, पर शिवाजी जेल से ऐसी चतुरता से निकल गया कि औरंगजेब को पता भी नहीं लगा। शिवाजी, अपने छोटे से राज्य को हिन्दू राज्य घोषित करके इतना सुन्दर ढंग से राज्य चलाया जो भारत के इतिहास में एक उदाहरण बन गया।

(4) लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल—सरदार पटेल आधुनिक समय के श्रीकृष्ण कहलाते हैं। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने खण्डित भारत को संगठित करके महाभारत बनाया उसी प्रकार सरदार पटेल ने 562 रियासतों को मिलाकर एक विशाल भारत

शेष पृष्ठ 8 पर....

कबर पूजा की सच्चाई : देशवासियो! आंखें खोलो

❑ डॉ० विवेक आर्य, सहसम्पादक शांतिधर्मी, समाचार-पत्र

समाज में अंधविश्वास बड़ी तेजी से पनपते जा रहे हैं। लोग एक चेतन परमात्मा को छोड़कर पता नहीं किस किस की पूजा करते हैं और उनसे मुराद मांगकर प्रसन्न होते हैं। इसी प्रकार की एक बुराई कबर पूजा की है। आजकल प्राय: हर वीरवार को सभी प्रमुख सड़कों के किनारे बनी मजारों पर सैंकड़ों की संख्या में लोगों की भीड़ देखी जा सकती है। हर प्रमुख सड़क, शैक्षिक संस्थान, तंग गलियों से लेकर व्यावसायिक संस्थानों तक मजारें देखी जा सकती हैं। समाचार पत्र और मीडिया इस पर कहते हैं कि श्रद्धालुगण एकता में अनेकता की मिसाल कायम करते हैं। अखबार कहते हैं कि यहाँ शीश झुकाने से श्रद्धालुओं की मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। अगर कोई निस्सन्तान दम्पती इस दरगाह पर आकर सच्चे मन से मुराद मांग ले तो बाबा निस्सन्तान दम्पती की झोलियाँ खुशियों से भर देते हैं। धार्मिक सिद्धान्त की दृष्टि से और तर्कपूर्वक विचार करने से किसी भी प्रकार से जड़ वस्तुओं से मुराद मांगने और उनके पूरे होने को सिद्ध नहीं किया जा सकता।

सबसे पहले तो वैदिक सिद्धान्त के अनुसार बिना पुरुषार्थ किए प्रार्थना निष्फल होती है। फिर प्रार्थना की जाए तो उसी के सामने की जाए जो प्रार्थना का अर्थ समझता है और उसमें उसे पूरा करने का सामर्थ्य है। हिन्दू मान्यता के अनुसार किसी व्यक्ति का मृत्यु के बाद पुनर्जन्म होता है। वह न तो कबर में विराजमान है और न ही वह किसी की बात सुन सकता है उसे पूरा करने का तो प्रश्न ही नहीं है। इस्लाम के सिद्धान्त के अनुसार भी वह जीवित नहीं है। उसे कयामत के दिन फिर से उठाया जाएगा। साथ ही इस्लाम के अनुसार खुदा के मामले में किसी को शरीक मानना कुफ्र है। खुदा के न्याय में किसी का हस्तक्षेप नहीं हो सकता। इसलिए किसी कबर पर मन्नत मांगने और उसके पूरा होने को एक अंधविश्वास के अतिरिक्त कुछ नहीं माना जा सकता।

ऐसे स्थानों पर भोले मुसलमानों और अंधविश्वासी हिन्दुओं को जुड़ा देखकर हमारा मीडिया एक और खुशफहमी का जोरों से प्रसार करता है कि यह स्थान साम्प्रदायिक सौहार्द का प्रतीक है। एक मूर्खतापूर्ण कार्य जिससे देश की जन और धन शक्ति व्यर्थ होती है उसे साम्प्रदायिक सौहार्द का नहीं अविद्या का प्रतीक कहना चाहिए। क्या हिन्दु और मुसलमान मिलकर चोरी करेंगे, निर्बलों को सताएँगे तो क्या उसे भी साम्प्रदायिक सौहार्द का प्रतीक माना जाएगा?

बहराईच में गाजी मियां की मजार पर हर वर्ष दस लाख लोग जाते हैं। समाचारों के अनुसार उनमें अधिकतर औरतें होती हैं और वे भी ज्यादातर हिन्दु औरतें, जो वहाँ उस मजार से बेटों की दुआ मांगने जाती हैं। क्या वे जानती हैं कि वह गाजी मियां कौन था? यह गाजी मियाँ सोमनाथ मन्दिर को तोड़ने वाले महमूद गजनवी का भानजा था। वह भारत आक्रमण के समय अपने मामा के साथ था। मामा भांजे ने अस्सी हजार तीन सौ की सेना लेकर भारत पर हमला बोला। नगरकोट और मथुरा को बुरी तरह लूटा। बहुत से मन्दिरों को गिरवाकर उनमें स्थापित मूर्त्तियों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। सोमनाथ मन्दिर नष्ट कर अपने साथ हीरे जवाहरात, रुपया पैसा, सोना चांदी, कीमती मूर्त्तियाँ, लाखों गुलाम लेकर गजनी लौट गया। जब हिन्दुओं के कहने पर उसने दोगुने सोने के बदले इन मूर्त्तियों को वापस करना स्वीकार किया तो गाजी मियाँ ने सलाह दी कि हिन्दुओं को मूर्त्ति लौटाना उनके मजहब के विरुद्ध है। गाजी मियां ने हिन्दुओं से सोना तो ले लिया पर मूर्त्तियाँ नहीं दीं।

कालान्तर में नाराज होकर गजनवी ने गाजी मियां को देश निकाला दे दिया। गाजी मियां ने अपनी सेना के साथ भारत में प्रवेश किया। भारत में स्थित अपने साथियों के सहयोग से सिंध में अर्जुन और मुलतान में सेठ अनंगपाल को लूटा। दिल्ली मेरठ और कन्नौज में लूट मार मचाते वह बाराबंकी पहुंचा। यहाँ उसने अपनी छावनी बनाई। सैफुद्दीन नामक अपने सिपहसालार को बहराइच में लड़ने भेजा। वहाँ मानिकपुर व बहराइच के 24 क्षत्रिय राजाओं ने राजा सोहेलदेव के नेतृत्त्व में पांच लाख की सेना के साथ इसका प्रतिकार किया। इतिहास लेखकों की यह धारणा रहती है कि हिन्दु राजाओं की एकता न होने के कारण उनकी सदा हार हुई। पर हिन्दु राजाओं की ऐसी अनूठी एकता का उदाहरण कभी वर्णित नहीं किया जाता। इस युद्ध में एक भी गुलाम नहीं बनाया गया। गाजी मियां की सेना का एक भी सैनिक जीवित न बचा। गाजी मियां भी राजा सोहेलदेव के बाण का शिकार हुआ। वीर रस के किसी कवि ने इस युद्ध का वर्णन इस प्रकार किया है-

पैदल के संग पैदल जुटिगै,
औ असवारन सौं असवार।
हौदा के संग हौदा भिरिगै,
ऊपर भई तेग की मार।
चारि घरी तक चली सिरोही,
रण में बही खून की धार।
खट-खट-खट-खट तेगा बाजें,
बोलै छपक-छपक तलवार।
खैंचि सिरोही लई छत्रिन नै,
भारी युद्ध कियो घमसान,
जैसे पान तमोली कतरै,
जैसे खेती लुनै किसान।
तैसे युद्ध कियो क्षत्रिन नै,
सबको काट कियो खरियान
भगे सिपाही गाजी वाले,
अपने डारि डारि हथियार।
तुर्कन के तन थर-थर कांपें,
चमकै छत्रिन की तलवार॥

सन् 1034 में गाजी मियां को मारा गया। इसके 317 वर्ष पीछे सन् 1341 में फीरोज तुगलक ने अपनी मां के कहने पर दरगाह बनवाई। इस स्थान पर एक बालाकि तीर्थ था। एक सूर्यकुण्ड भी था। तुगलक ने सूर्यकुण्ड को मिट्टी से भरकर उस पर दरगाह बनवा दी। इस दरगाह में हिन्दु मुस्लिम दोनों आते हैं। यहाँ मुस्लिम लोग संगमरमर की कब्र को स्नान करवाते हैं। वह पानी एक मोरी में इकट्ठा हो जाता है। इस पानी में एक दो कोढ़ियों के बीच कुछ स्वस्थ लोग भी बैठ जाते हैं। वे 'ठीक हो गया ठीक हो गया' कहकर शोर मचाते हैं। सुनने व देखने वाले गाजी मियां को बहुत बड़ा देवता समझने व मानने लगते हैं। मेले में झाड़ फूंक, गंडा ताबीज, औलाद, बरकत, बीमारी अच्छी होना, दु:ख दूर होना आदि का जबरदस्त प्रचार करके लोगों को अंधविश्वास में ढकेला जाता है। मशहूर संगीतकार ए०आर० रहमान ऐसी ही हस्ती हैं जिनका परिवार उनकी बहन की बीमारी ठीक होने के पीछे एक पीर का चमत्कार मानने लगा और मुसलमान हो गया।

इसके पीछे एक विडम्बना और भी है। यह है कृतघ्नता। गाजी मियां, जिसने इस देश के बाशिन्दों के दुधमुंहे बच्चों तक को न छोड़ा उससे बच्चों की मन्नत मांगने वाले देशवासी उसके अत्याचार का प्रतिकार करने वाले राजा सुहेलदेव और उनके साथियों का नाम तक नहीं जानते!

छत्रपति शिवाजी महाराज ने अफजल खां को परलोक पहुंचाया था। उसकी मजार प्रतापगढ़ में बना दी गई थी। आज शिवाजी के वे वंशज, जिन्हें संतान नहीं होती, उस मजार पर चादर चढ़ाकर संतान की मन्नत मांगते हैं।

शेख अहमद सरहिन्दी (1564-1634) जहांगीर के समय उत्तर भारत में इस्लाम का प्रचार कर रहे थे। उन पर स्वयं मुसलमानों ने हिन्दु रक्षक गुरु अर्जुनदेव को मरवाने का आरोप लगाया था। सरहिन्द (अम्बाला लुधियाना मार्ग पर स्थित) पंजाब में इनकी मजार पर हिन्दू मन्नत मांगते हैं।

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में कबरों पर दृष्टि डालने का एकमात्र उद्देश्य यही है कि लोग कम से कम कृतघ्नता के पाप से तो बचें। अमर हुतात्मा पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल ने कहा था-

शहीदों की चिताओं पर,
जुडेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का,
यही बाकी निशां होगा।।

वतन पर मिटने वालों का तो नाम भी आज की पीढ़ी भूलती जा रही है। देश पर मरने वाले चाहे वे किसी भी वर्ग से संबंधित क्यों न हों, उनका विश्व स्तरीय दर्शनीय स्मारक आपको कहीं नहीं मिलेगा। कबरों पर चादर चढ़ाने के लिए नेता लोग जाएँगे और मीडिया में उसको पूरे उत्साह से प्रसारित करवाएँगे। आम जनता में यह भ्रम पैदा करने के लिए कि ये सभी धर्मों का आदर करते हैं।

साम्प्रदायिक सौहार्द का सही मायना तो यह है कि देश के सभी लोग देश की तरक्की के लिए कार्य करें। इस प्रकार के अंधविश्वासों से देश की उन्नति नहीं, अपितु बौद्धिक, आर्थिक, सामाजिक हानि ही होती है।

मन्नत मांगने के मामले में चाहे वे नदी नाले हों, मजार दरगाह हों, तालाब

शेष पृष्ठ 7 पर....

दीर्घायु की प्राप्ति

इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः॥ ऋ० 10.18.3॥

अर्थ—(इमे जीवाः) ये जीते हुये लोग (मृतैः) मृत्यु के कारणों से (वि आववृत्रन्) पृथक् रहें (अद्य) इस जीवन में (नः) हमारे लिये (देवहूतिः) विद्वानों का उपदेश (भद्रा अभूत्) कल्याणकारी होवे। (द्राघीयः प्रतरम् आयुः) दीर्घकाल तक पूर्ण स्वस्थ आयु को (दधानाः) धारण किये हुये हम (नृतये) नृत्य, व्यायाम, खेलकूद और (हसाय) हँसने, मनोरञ्जनादि के लिये (प्राञ्चः अगाम) आगे बढ़ते रहें।

मन्त्र में मृत्यु के कारणों को जानना, विद्वानों से सदुपदेश प्राप्त करना और दीर्घायु तथा शारीरिक स्वास्थ्य के लिये व्यायाम और मानसिक स्वास्थ्य हेतु हँसना या प्रसन्न रहना बताया है। इस सभी पर क्रमशः विचार करते हैं क्योंकि इसका सम्बन्ध निजी जीवन से है।

1. इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्—ये जीवित लोग मृत्यु के कारणों से दूर रहें। इसी सूक्त के प्रथम मन्त्र में कहा है—**यस्ते पथ इतरो देवयानात्** देवयान से पृथक् अर्थात् पितृयान वालों को मृत्यु अपना ग्रास बनाती है यह ज्ञात हुआ। मनुस्मृति में कहा है—

अनभ्यासेन वेदानामाचारस्य च वर्जनात्।
आलस्यादन्न दोषाच्च मृत्युर्विप्रान् जिघांसति॥ (मनु० 5.4)

वेदों का स्वाध्याय न करने, सदाचार का परित्याग, आलस्य और अन्न के दोष से मृत्यु विप्र अर्थात् बुद्धिमान् लोगों को मारना चाहती है। महाभारत शान्तिपर्व में कहा है कि मृत्यु अन्तकाल में काम और क्रोध को प्रेरित कर उनके द्वारा उन्हें मोह में डालकर मार डालती है।

अथो प्राणान् प्राणिनामन्त काले कामक्रोधौ प्राप्य निर्मोह्य हन्ति॥
(महा०शा० 258.37)

आयुर्वेद के अनुसार रोग व्यक्ति के श्रेय एवं जीवन का अपहरण करने वाले हैं—**रोगास्तस्यापहर्तार श्रेयसो जीवितस्य च** (चरक सू० 1.15) उपर्युक्त प्रमाणों से हमने जाना कि पितृयान मार्ग मृत्यु की ओर जाता है, वेद को न पढ़ना, सदाचार को छोड़ देना, आलस्य और अन्नदोष, काम, क्रोध, मोह और रोग ये सब मृत्यु के कारण हैं। दीर्घ जीवन की अभिलाषा करने वालों को इन सबका परित्याग कर देना चाहिये।

2. न अद्य देवहूतिः भद्रा अभूत्—विद्वानों का उपदेश मृत्यु से बचाने का सरलतम उपाय है। आयुर्वेद का स्वस्थवृत्त और अथर्ववेद (काण्ड 8 सूक्त 1) मनन करने योग्य हैं। वेद में दीर्घायु को प्राप्त करने के लिये बहुत सारे उपाय बतलाये हैं जिनमें से कुछ का दिग्दर्शन कराना पर्याप्त होगा—**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत** (अथर्व० 11.5.19) ब्रह्मचर्य के तप से देवों ने मृत्यु को दूर भगा दिया। **आयुर्यज्ञेन कल्पताम्** (यजु० 9.21) यज्ञ से दीर्घायु की प्राप्ति होती है। **यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायु स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः** (यजु० 34.51) संयमी, सदाचारी, की दीर्घ आयु होती है। ऐसे ही प्राणायाम आयु की वृद्धि करता है। मनुस्मृति ने सदाचार पर बल दिया है—

आचाराल्लभते ह्यायुराचादीप्सिताः प्रजाः।
आचाराद् धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥ (मनु० 4.156)

सदाचार का पालन करने से दीर्घायु की प्राप्ति होती है। उत्तम सन्तान, अक्षय धन मिलता है और अधर्म के लक्षण समाप्त हो जाते हैं। इसके विपरीत—

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
दुःख भागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च॥ (मनु० 4.157)

जो दुष्ट आचरण वाला है वह सर्वत्र निन्दित होता है। वह सदा दुःखी रोगग्रस्त और अल्पायु होता है।

अहिंसा सत्यवचनमक्रोधः क्षान्तिरार्जवम्।
गुरुणां नित्य सुश्रूषा वृद्धानामपि पूजनम्॥
शौचादकार्य संत्यागः सदा पथ्यस्य भोजनम्।
एवमादि गुणं वृत्तं नराणां दीर्घ जीवितम्॥
(महा० अनु० अ० 145)

अहिंसा, सत्यभाषण, क्रोध का त्याग, क्षमा, सरलता, गुरुजनों की नित्य सेवा, बड़े-बूढ़ों का सम्मान, पवित्रता का ध्यान रखते हुये न करने योग्य कर्मों का त्याग, सदा पथ्य भोजन इत्यादि गुणों वाला आचरण दीर्घजीवी लोगों का है।

3. प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः दीर्घ आयु की प्राप्ति हेतु प्रतिदिन व्यायाम, नृत्य, खेलकूद और हँसना, प्रसन्न रहना चाहिये।

व्यायाम किसे कहते हैं एवं इसके लाभ चरक संहिता में बतलाते हुये कहा है—

शरीर चेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धनी।
देहव्यायाम संख्याता मात्रया तां समाचरेत्॥

शरीर की जो चेष्टा, अपनी रुचि के अनुकूल, शरीर में स्थिरता लाने वाली और बल की वृद्धि करने वाली हो, उसे व्यायाम कहते हैं। इसका सेवन मात्रा में ही करना चाहिये।

लाघवं कर्म सामर्थ्यं स्थैर्यं दुःखसहिष्णुता दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते॥ (चरक सू० 7.31-32)

व्यायाम करने से शरीर में हलकापन, कार्य करने का सामर्थ्य, शरीर में स्थिरता, दुःख सहने की क्षमता, दोषों का क्षय और जठराग्नि की वृद्धि होती है।

4. जैसे शरीर के लिये व्यायाम लाभदायक है वैसे ही मानसिक स्वास्थ्य के लिये हँसना सर्वोत्तम औषध है। हँसने से हृदय की नाड़ियाँ खुल जाती हैं और फुफ्फुस और हृदय में शुद्ध रक्त का सञ्चार और ऑक्सीजन पहुँचती है। रोग निवारण क्षमता का विकास होता है तथा मानसिक तनाव की निवृत्ति होती है। उन्मुक्त अट्टहास सभी को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। हँसने से मन में दबे हुये राग-द्वेष जैसे विकार घुल जाते हैं।

हँसना एक गुण है परन्तु उसकी भी सीमा है। किसी के दुर्गुण, कमी या भूल पर हँसना या व्यंग्य करना अपराध जैसा ही है।

हँसो हँसाओ इस जीवन में बड़ी चीज है हँसना।
पर ऐबों पर हँसना समझो पाप पंक में फँसना॥

(साभार-वेद-स्वाध्याय) **—आचार्य बलदेव**

अपील

जैसा कि विदित है कि 12 अक्तूबर की रात को भीषण चक्रवाती तूफान से ओड़िशा भयंकर कराल काल में प्रवेश हो गया है।

इस भीषण तूफान में आपकी प्रिय संस्था "**वैदिक गोशाला बादिकटा**" के छान पूर्णरूपेण उड़कर नष्ट हो गया है। अतः गोमाताओं को शून्य मैदान में रहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। वर्तमान गोशाला में एक सौ से ऊपर गोमाता हैं। लंगड़ी-लूली बीमार और वृद्ध गोमाताओं की अधिक संख्या है। अब सर्दी सामने आने वाली है। सर्दी से पहले ऊपर की Selter (छान) की व्यवस्था करना अति आवश्यक है। ये गोमातायें अधिकांश कसाइयों से छुड़ाई गई है तथा पूज्य तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी महाराज (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) द्वारा उद्घाटित है। हम धीरेधीरे आगे बढ़ रहे हैं। हमारा लक्ष्य ओड़िशा के पर्वतीय इलाकों में स्थान-स्थान में हजारों की संख्या में गोमाताओं की रक्षा करनी है। भारत से विलुप्त हो रहे गोमाताओं की अनेक देशी प्रजातियों का दर्शन हमारे गोशाला में होगा।

इस वात्या प्रकोप से गरीबों की झोपड़ी कच्चे मकान एवं धान आदि का फसल नष्ट हो गया है। आप अन्न, वस्त्र, कम्बल, चादर और धोती, साड़ी आदि राहत सामग्री भिजवाने का कष्ट करेंगे।

आपसे नम्र निवेदन है कि गोमाताओं की रक्षा हेतु चैक अथवा नकद राशि संस्था के खाता नं० पर भिजवाकर पुण्य के भागी बनें।

संस्था का नाम एवं खाता नं० इस प्रकार है—

खाता नं० - **30994812076**
संस्था का नाम - **वैदिक गोशाला बादिकटा**
बैंक - **भारतीय स्टेट बैंक**

निवेदक

प्रधान	सचिव
श्री आशुतोष नाथ	**आचार्य इन्द्रमणि शास्त्री**
मो० 09438650517	मो० 09777192038

पता-'वैदिक गोशाला बादिकटा' ब्यहा-पद्मपुर, जिला बरगढ़ ओड़िशा पिन-768036

आधुनिकता के राक्षस ने बिगाड़ दिए बहन-भाई के रिश्ते

❑ महावीर 'धीर', 21/1227, प्रेमनगर, हैफेड रोड, रोहतक 9466565162

आधुनिकता, लोकतंत्र और मानव अधिकारों के नाम पर कुछ लोग मानवता को ही नष्ट करने पर तुले हुए हैं। ये लोग उसी थाली में खाते हैं और उसी में छेद करने की तलाश में रहते हैं और मौका लगते ही छेद कर देते हैं और फिर उस छेद को उचित ठहराने के लिए चिल्लाने लगते हैं। संगोष्ठियाँ, बयानबाजी, याचिकाएँ और आमजन को बहकावे में लग जाते हैं। ऐसे अनेक मानवाधिकारों के रक्षक विदेशों में भारत विरोधी संगोष्ठियों में जोशीले भाषण झाड़ते हुये पाए गए थे। वे बोले थे कि **''हमें पता नहीं था कि ये भारत विरोधी संगोष्ठियाँ हैं।''** यदि ऐसा था तो इन्हें उनसे मिली सुविधा, सम्मान व पैसा लौटा देना चाहिए था, लेकिन कुछ दिन चुप रहकर ये फिर उसी देशद्रोह के कार्य में लिप्त हो जाते हैं। जैसे कुछ सांसद संसद में पैसे लेकर ऐसे लोगों के हित में प्रश्न पूछते पकड़े गए थे। ऐसे ही सम्भव है ये लोग भी पैसे लेकर आतंकवादियों के मानवाधिकारों की बात करते हों। ऐसे लोगों को संतुष्ट रखने के बीज तो मोहनदास कर्मचन्द गांधी ने ही बो दिए थे। जब उन्होंने बहुमत द्वारा चुने गए सुभाषचन्द्र बोस को स्वीकार नहीं किया। खिलाफ आन्दोलन चलाकर मोहम्मद अली जिन्ना जैसे सच्चे धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति को तथा देशभक्त लोगों को निराश किया। स्वामी श्रद्धानन्द को जामामस्जिद में बुलाकर मुसलमान और हिन्दुओं ने जब उन्हें अपना एकछत्र नेता मान लिया तब गाँधी जी ने उनके शुद्धि आन्दोलन का विरोध करके कट्टरपन्थियों को खुश किया। स्वामी श्रद्धानन्द के तप, त्याग, साहस व भाईचारे से दबे हुए कट्टरपंथी गांधी जी की बात सुनकर उठ खड़े हुए और उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। आजाद हिन्द फौज के भय से भयभीत अंग्रेज ने जब गांधी ब्रिगेड को सरकार बनाने के लिए प्रेरित किया तब नेहरू जी जो खेल माऊंट-बेटन के साथ खेल रहे थे वह सब गाँधी जी देख रहे थे। प्रधानमंत्री के प्रश्न पर पूरा देश व पूरी कांग्रेस भी सरदार पटेल में अपना उज्ज्वल भविष्य देख रही थी फिर एक बार गांधी जी ने पलटी मारी और देश पर जवाहरलाल नेहरू को थोप दिया। यह क्या रहस्य था जो बार-बार गांधी जी ने अपने जीवन में बड़े-बड़े लोगों को किनारा दिखाया लेकिन वे गांधी जी का मुकाबला नहीं कर पाए लोग इस रहस्य का खुलासा यह कहकर करते सुने जाते हैं कि **''गांधी जी अंग्रेज से मिले रहते थे।''** यह सब अतीत के गर्भ में छिपा हुआ है। हम नहीं जान सकते कि देश की आजादी के लिए देश तोड़ना स्वीकार किया गया या नेहरू को गद्दी पर बैठाने के लिए देश तोड़ा गया। चौ० छोटूराम के शब्दों में सत्यता छिपी हुई है कि **''गाँधी जी! भले ही आजादी कुछ वर्षों के बाद मिले लेकिन देश विभाजन किसी कीमत पर भी स्वीकार न किया जाए, नहीं तो यह उपमहाद्वीप युद्धों का अखाड़ा हमेशा-हमेशा के लिए बन जाएगा।''**

नेहरू जी भारत में पैदा होकर भी संस्कारों से भारतीय नहीं थे। उनकी **'भारत की खोज'** पुस्तक भी अंग्रेजी लेखकों के विचारों से अनुप्राणित है। उससे भारत का गौरव स्पष्ट नहीं होता। आर्य बाहर से आये और भारत में विभिन्नता में एकता के तथ्यहीन उदाहरण दिए गए हैं इस महान कही जाने वाली पुस्तक में। जिसकी एक-एक पंक्ति का उत्तर श्री राजेश आट्टा **'दयानन्द संदेश'** पत्रिका में बखूबी निरन्तर दे रहे हैं। श्री नेहरू स्वयं कहते थे कि मैं या कुछ मुसलमानों के निकट अपने को पाता हूँ वरना मैं भारत का अंतिम अंग्रेज ही हूँ। नेहरू ने तिब्बत और नेपाल के लोगों की इच्छा होते हुए भी उन्हें भारत में नहीं मिलाया। पटेल ने 600 रियासतें देश में समाहित कर डाली लेकिन नेहरू अपने दावे के विपरीत कश्मीर को देश का नासूर बना गया। नेहरू ने भारतीय भाषा व संस्कृति को कुचलने में कसर नहीं छोड़ी। नेहरू ने रूस के झांसे या दबाव में आकर भारतीय विश्वविद्यालयों, शोधपीठों, इतिहास व पाठ्यक्रम निर्धारित समितियों में प्राय: कर कम्युनिस्ट विचारधारा के लोगों को भर दिया, जिन्होंने धीरे-धीरे हमारे पाठ्यक्रमों से भारतीय संस्कृति के पोषक तत्त्वों को दूर कर दिया। इतिहास को विकृत कर दिया। हिन्दी संस्कृत को पददलित कर अंग्रेजी को हावी कर दिया। उत्तर भारत के लिए एक दुर्भाग्य नेहरू और दे गया जो हमें रोजाना डस रहा है वह है—**'हिन्दू विवाह अधिनियम'।**

अधिनियम लागू होते समय इस का विरोध हुआ था लेकिन यह पूरे देश पर थोप दिया गया। हिन्दू उत्तराधिकार नियम में लड़की को पिता की सम्पत्ति में अधिकार को भी लोगों ने बुरा माना था क्योंकि माता-पिता व भाई से बहन को कभी असुविधा नहीं हुई। असुविधा थी तो लड़की को ससुराल में थी लेकिन ससुर की सम्पत्ति में बहू को सीधा अधिकार क्यों नहीं दिया गया? इससे पता लगा कि भाई-बहन के रिश्ते को बिगड़ना ही नियम उद्देश्य स्पष्ट है। इसके बाद बहन की दृष्टि पिता की सम्पत्ति पर कहीं-कहीं कुदृष्टि बन गई। विवाह अधिनियम को लोग भूल गए थे तथा अपनी परम्पराओं में निश्चिन्त रहकर क्षेत्र के लोग जीवन यापन कर रहे थे, लेकिन शिक्षा के कम्युनिस्टीकरण के कारण युवाओं का अपनी संस्कृति से लगाव कम हुआ वहीं कम्युनिस्ट लोगों ने ही हिन्दू अधिनियम कमी का प्रचार लोगों में किया तो कुछ युवा फिसल गए और गाँव के गाँव और एक गोत्र में विवाह के लिए हठ कर बैठे। विवाह के तरीके और नियम कम्युनिस्ट वकीलों ने युवाओं को बताए तथा न्यायालय में जाने की राह भी बताई गई। भटके बच्चे गाँव व पंचायत के बुजुर्गों की बात व दबाव व रिश्तेदारों की सलाह मान भी जाते हैं लेकिन कम्युनिस्टों के विभिन्न संगठनों के व्यक्ति बच्चों को बहकाते हैं तथा उनकी प्रशासन व न्यायालय में मदद करते हैं जिससे नादान बच्चे घर से भाग कर शादियाँ रचाते हैं तथा प्रशासन की मदद लेते हैं। माता-पिता इतने शर्मसार हो जाते हैं कि या तो वे अनेक बार स्वयं ही आत्महत्या कर लेते हैं या बच्चों को ही मार डालते हैं। एक यह श्रेष्ठ परम्परा है कि हमारे क्षेत्र में गाँव, गोत्र और गुहांड की लड़की को बहन समझा जाता है। इससे युवाओं की दृष्टि लड़कियों की ओर बहन की दृष्टि ही रहती है। इससे हमारे समाज में सदाचार का वातावरण रहता था लेकिन आधुनिकता और मानवाधिकारों के व्याख्याता लोग हमारे बच्चों को राक्षस के समान डस रहे हैं। वे वासना का जहर बच्चों में भर रहे हैं और कह रहे हैं, हे भारत के स्वतन्त्र युवा, तू बालिग है। किसी भी लड़की पर प्रेमिका के रूप में कुदृष्टि फैंकना तेरा संविधान सम्मत अधिकार है। तू निडर होकर अपने अधिकार का प्रयोग कर। शासन-प्रशासन-पुलिस-न्यायालय सब तेरे साथ हैं, घबरा मत। माता-पिता और परम्पराओं की धज्जी उड़ा दे। सब का धत्ता बताकर हमारी शरण में आ जा। ये गाँव गोत्र गुहाण्ड के बन्धन सब बकवास है इन्हें तोड़ दे। तूझे तेरे अधिकार से वंचित रखने वाले ये तेरे माता-पिता नहीं, ये तेरे शत्रु हैं। तू इनकी परवाह मत कर। ये उजड़ कहते हैं कि पहले भी तो स्वयंवरों में कन्या स्वयं वर चुनती थी। ऐसा कहकर जनसाधारण को बहकाते हैं। ये छली इस बात को प्रकट नहीं करते कि स्वयंवर माता-पिता की स्वीकृति और उपस्थिति में गोत्र आदि की जांच के बाद ही होते थे। पिछले दिनों **'न्यूज-24'** दूरदर्शन शृंखला पर लम्बी दाढ़ी वाले किसी धर्माचार्य को लाया गया था जो बड़े छल से कह रहा था कि—स्वामी दयानन्द ने भी कन्या को पूज्या माना है लेकिन उसे मारा जा रहा है, अपमानित किया जा रहा है। लेकिन ये कथित धर्माचार्य यह नहीं बता रहे थे कि स्वामी दयानन्द महाराज ने **''माता की छह पीढ़ी तथा पिता के गोत्र को छोड़कर विवाह करने को उत्तम माना है।''** धर्माचार्य कहे जाने वाला यह व्यक्ति छल से यह तथ्य क्यों नहीं बता रहा था? **'न्यूज-24'** ने 4 व्यक्ति सगोत्र विवाह के समर्थक बुला रखे थे तथा एक साधारण व्यक्ति खाप-पंचायत की ओर से गाँव-गोत्र छोड़कर विवाह करने के समर्थक के रूप में बुलाया था, जिसे बोलने भी नहीं दिया जा रहा था। चारों व्यक्ति वह बोलने लगता तभी बीच में ही बोलने लगते थे। वाद संचालक भी निष्पक्ष न होकर सगोत्र समर्थकों के सहयोग में ही बार-बार बोल रहा था। यह तो खुले रूप में पक्षपात हो रहा था। ऐसे चैनल पर तो खाप पंचायतों की मानहानि का दावा डालना चाहिए जो खाप पंचायतों पर झूठे आरोप लगा रहा है। उन्नीसवीं सदी के महान् विद्वान् व चिन्तक स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के दसवें नियम में लिखा

शेष पृष्ठ 5 पर....

ग्रामीण जीवन

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

मैं जब भी किसी गाँव से गुजरता हूँ, तो आस-पास का वातावरण देखकर एक अजीब-सी शान्ति मिलती है, साथ ही ग्रामीण आंचल में बिताए गए पलों की स्वाभाविक स्मृति होने से एक घुटन भरी हुई लेकिन मीठी-सी हुक उठती है। ऐसा क्यों होता है? गाँव में बिताए गए पलों की याद ही मुझे इस बात का उत्तर देती है।

रोहतक जिला के गढ़ी (अस्थल बोहर) में ही जीवन के आरम्भिक चौदह वर्ष मैंने व्यतीत किये। गाँव का विद्यालय गाँव से दूर एकान्त वातावरण में स्थित था। बीच रास्ते में दो तालाब पड़ते तथा एक बड़ा तालाब स्कूल से बहुत आगे बनी में था जिसे डाब्बर वाला जोहड़ बोलते थे। उस समय तालाब गांव से दूर होने के कारण तालाबों का पानी शुद्ध रहता था। ये बड़े-बड़े ऐसे 'स्वीमिंग पुल' जिनमें अमीर-गरीब सब किसी भी समय स्नान या यूँ कहें कि भरपूर स्नान कर सकते थे। स्नान करते समय जिस समय बारिश आ जाती थी तो स्नान का आनन्द कई बढ़ जाता था।

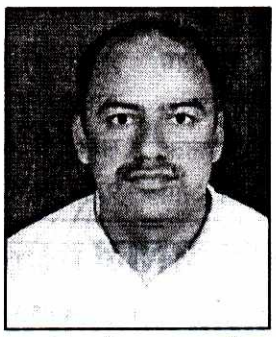
आचार्य अभय आर्य

इस क्रिया में व्यायाम भी खूब हो जाता था तथा मन प्रसन्न होने से स्वास्थ्य भी उत्तम रहता था। गर्मी के दिनों में भरी दोपहरी में बालक शहतूत, जामुन के वृक्षों पर चढ़कर फलों का सेवन करते थे। अब तो जामुन सैकड़ों रुपये किलो मिलती है और वह भी जहरयुक्त। बालकों के विभिन्न खेल भी भागमभाग युक्त होते थे। कुएँ पर भी स्नान किया जाता था।

गाँव से दूर अस्थल बोहर में एक कुआँ था जिसे बाबा वाला कुंआ कहते थे। उसके साथ ही अखाड़ा था। कुएँ का पानी बहुत मीठा व स्वच्छ था। मैं स्वयं साइकिल पर घर के पीने का पानी भी वहीं से लाता था। वहीं स्नान करते थे। व्यायाम करते हुए बड़े बालकों को देखकर हमारा हृदय भी उत्साह से भर जाता था। हम प्रात: 4-5 बजे ही उठकर 11-12 वर्ष के बालक दूर डाबर वाले तालाब के पास व्यायाम व स्नान करने चले जाते थे, वहाँ भी एक कुआँ था। विभिन्न त्यौहारों पर दंगल होते थे। वर्त्तमान में भी होते हैं, लेकिन अब आयोजक गाँव का तो इक्का-दुक्का ही दंगल में भाग लेता है, बाकी के पहलवान बाहर के ही होते हैं। लेकिन उस समय आयोजक गांव के छोटी और युवावस्था वाले पहलवानों की भीड़ हो जाती थी। अब तो गाँव वाले बालकों के पास न तालाब में तैरने का, न वृक्षों पर चढ़कर ताजे फल खाते हैं, न ही भाग-दौड़ वाले खेल खेलते हैं। गाँव में केबल घुस गया है, सब टी.वी. देखते रहते हैं। इस उपेक्षा से साधन भी नष्ट हो रहे हैं। तालाब नहीं रहे या उनका पानी सड़ चुका है। मैंने स्वयं जाकर देखा है कि बाबा वाला कुंआ भी खण्डहर बन चुका है।

उस समय गाय-भैंसों के अलग-अलग झुण्ड बनकर पाली चराने के लिए ले जाता था। शाम को वे झुण्ड धूल में उड़ाते हुए गाँव की ओर आते थे। पाली उनके पीछे होता था। गलियों से गुजरते हुए वे पशु स्वयं ही अपने से सम्बन्धित घरों में घुस जाते थे। कितना मनोहारी दृश्य होता था। घी-दूध, मक्खन, लस्सी पर्याप्त मात्रा में मिलते थे। सर्दी, गर्मी, वसन्त, बरसात के अलग-अलग पौष्टिक पकवान माताएँ बनाती थीं।

गरीब से गरीब व्यक्ति भी तनावरहित रहता था। आपस में हँसी-मजाक होता था। संयुक्त परिवार थे। आज गाँव में भी यह सब बदल चुका है। नालियों, गलियों, खेत की मेढ़ों को लेकर आपसी झगड़े होते हैं। सरकार ने गांव के अतिरिक्त खेतों में भी शराब के ठेके खोल दिए हैं।

यही कुछ बातें हैं जो मुझे ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षित करती हैं। मेरा सौभाग्य है कि इस जीवन का लम्बा अनुभव मुझे मिला। मेरा एक लगभग 9-10 वर्ष का बेटा व 4-5 वर्ष की बेटी है। मैं उन्हें देखकर सोचता हूँ कि ग्रामीण जीवन के अनुभव, संग के बगैर इनमें वीरता के भाव, संघर्ष के भाव कैसे आयेंगे? लेकिन अब गांव में भी वह बात कहाँ?

आर्य उपदेशकों को तन्मयता से ग्रामीण जीवन को उसकी उपयोगिता लौटाने का प्रयास करना चाहिए।

दानवीरों व कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया

दिनांक 10.10.2013 को गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) में पं० रामजीलाल आर्य पूर्व सांसद की अध्यक्षता में सम्मान समारोह हुआ। मंच का संचालन आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने किया। श्री राजकुमार आर्य व श्री राधेश्याम आर्य ने अपने स्व० पिता सेठ रामधारी आर्य की याद में 11 लाख रुपये देकर गुरुकुल का शानदार गेट बनवाया। दूसरा गोशाला द्वार श्री मनरूपसिंह सिंहमार मात्रश्याम ने स्व० श्री रामलाल जी सिंहमार पिता की यादगार में डेढ़ लाख रुपये का दान देकर बनवाया।

इस अवसर पर सेठ जगदीश आर्य गुरेरा ने अपनी ओर से 21 हजार रुपये का दान गुरुकुल के लिए दिया। श्री शीशपाल महलान ने गुरुकुल के लिए 21 हजार का दान दिया। आर्यसमाज नागौरी गेट की ओर से श्री बदलुराम आर्य ने गुरुकुल के लिए 21 हजार रुपये का दान दिया। वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष रामकुमार आर्य की टीम ने ब्र० दीपकुमार आर्य, सत्यप्रकाश मित्तल आदि का विशेष सहयोग रहा। सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही आदि तथा उपरोक्त दानवीरों को शॉल, स्मृति चिह्न, वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री

ऋषिवर-वन्दना

टेक—जहाँ में वेद की ज्योति, ऋषिवर ने जलाई थी।
भरा है वेद में सब कुछ, ये लोगों को बताई थी।
जहाँ में वेद की ज्योति....

1. **भटकते थे यहां पर सब, जहाँ जिसमें भी मन माने।**
सभी पाखण्ड में अन्धे, कोई ईश्वर को क्या जाने।
बताया जग को ऋषिवर ने, जो सदियों की बुराई थी।
जहाँ में वेद की ज्योति....

2. **कोई हिन्दू कोई मुस्लिम, कोई ईसा को भजता था।**
कोई मन्दिर कोई मस्जिद, कोई अल्लाह कहता था।
कहा वेदों में है सब कुछ, जो ऋषियों ने सुनाई थी।
जहाँ में वेद की ज्योति....

3. **दशा ऐसी थी माता की, मुझे अफसोस होता है।**
कहीं माता विकल होती, कहीं पर कोई रोता है।
ये ममता का मधुर बन्धन, जो बरसों से पराई थी।
जहाँ में वेद की ज्योति....

4. **कहा ऋषिवर ने फिर सबको, करो तुम ईश का वन्दन।**
जपो तुम ओ३म् की माला, 'सरस' हो जायेगा जीवन।
दिया ऋषिवर ने वेदामृत, अविद्या जग में छाई थी।
जहाँ में वेद की ज्योति....

—सुरेन्दकुमार 'सरस', कम्प्यूटर ऑपरेटर, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक मो. 9254069111

आधुनिकता के राक्षस ने बिगाड़ दिए.... पृष्ठ 4 का शेष....

है कि "**सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।**" गाँव, गोत्र और गुहाण्ड छोड़कर विवाह करना सर्वहितकारी है। इसके पालन करने में हमें परतंत्र रहना चाहिए। बच्चों को बिगाड़कर समाज में अशान्ति एवं क्रूरता फैला इन राक्षस रूपी व्यक्तियों का समाज को मिलकर बहिष्कार करना चाहिए। ये सर्वहितकारी नियम पालने में भी परतन्त्र (अनुशासित) नहीं रहना चाहते हैं। खान-पान, पहराव व भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ मूल्यों को नष्ट करने के लिए ये मनमर्जी चाहते हैं। इन्हें ठीक ही वामपंथी, वाममार्गी (उलटे मार्ग पर चलने वाले) कहा जाता है। पानी गड्ढे में तो स्वत: ही चला जाता है लेकिन ऊँचे चढ़ाने में कष्ट उठाना पड़ता है। बच्चे बुराई को जल्दी पकड़ते हैं और फिर समर्थन मिल जाये तो कैसे रुकें? बुराई के समर्थकों का ही बहिष्कार पहले होना चाहिए तथा '**हिन्दू विवाह अधिनियम**' को बदलवाने के लिए एकता करनी चाहिए।

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन

मानव सेवा प्रतिष्ठान के 15 वर्ष पूर्ण होने के शुभावसर पर संस्थान ने छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार तथा अभिनन्दन समारोह का भव्य आयोजन 06.10.2013 को 119, गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के विशाल भवन में बड़ी धूमधाम से स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (प्राचार्य गुरुकुल गौतमनगर) की अध्यक्षता में किया गया। समारोह में 10 विद्वानों एवं विदुषियों को प्रशस्ति-पत्र, शाल तथा 11-11 हजार रुपये से सम्मानित किया गया।

सम्मानित विद्वान्-विदुषियों में—

स्वामी रामवेश जी (महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, जीन्द हरयाणा) को स्व० श्रीमती मुख्त्यारी देवी बेरी, झज्जर, हरयाणा स्मृति सम्मान से।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओमप्रकाश जी वर्मा (यमुनानगर, हरयाणा) को स्व० श्री डॉ० आनन्दकुमार बिरजा देनहॉग हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से।

पण्डित कमल नारायण जी (रायपुर, छत्तीसगढ़) को स्व० श्री मास्टर रतनसिंह जी, माजरा डबास दिल्ली स्मृति सम्मान से।

भजनोपदेशिका श्रीमती संतोषबाला आर्या (गन्नौर, सोनीपत, हरयाणा) को श्रीमती लक्ष्मी देवी नोलथा पानीपत हरयाणा स्मृति सम्मान से।

स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक (महर्षि दयानन्द गोशाला, नांगलिया रनमोक, रिवाड़ी, हरयाणा) को स्व० श्री रामपत आर्य इसमाइला स्मृति सम्मान से।

आचार्या निशा आर्या (कन्या गुरुकुल, हसनपुर, पलवल, हरयाणा) को स्व० श्रीमती इतवारिया रामदास तिवारी हालैण्ड स्मृति सम्मान से।

सविता विद्यालंकार (कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस, उत्तर-प्रदेश) को स्व० श्रीमती शीलवती देवी वल्लभगढ़, भरतपुर (राज०) स्मृति सम्मान से।

श्री पं० ओम्प्रकाश वर्मा का सम्मान करते हुए स्वामी प्रणवानन्द जी, पं० देवानन्द भगेलू एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारी।

आचार्य रवीन्द्र नागर जी (प्राचार्य भारतीय विद्या भवन, दिल्ली) को स्व० आचार्य श्रीराम शास्त्री ज्ञानपीठ सम्मान से।

ब्र० अञ्जलि आर्या (उपाचार्य कन्या गुरुकुल पंचगांव भिवानी, हरयाणा) को स्व० श्रीमती भानुमती पूरन कल्पू, देनहॉग हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से।

आचार्य जयकुमार (गुरुकुल मंझावली फरीदाबाद, हरयाणा) को स्व० श्री पं० ऋषि बलदेवतिवारी जी हालैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया।

इस अवसर पर **मानव सेवा प्रतिष्ठान** द्वारा विभिन्न शिक्षा संस्थाओं एवं गुरुकुलों के जरूरतमंद, मेधावी 135 छात्र/छात्राओं को 4.75 लाख रुपये छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार के रूप में वितरित किये गये। इस समारोह में नॉदर्न अमेरिकन जॉट चैरिटी द्वारा भी पाँच लाख रुपये की छात्रवृत्ति विभिन्न शिक्षा संस्थाओं के 50 छात्र-छात्राओं को वितरित की गई। इस समारोह में मुख्य अतिथि **श्री रामस्वरूप जी आर्य** (नॉर्दन अमेरिकन जॉट चैरिटी) यू.एस.ए. से आकर छात्र/छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित किया तथा लक्ष्य निर्धारित करके लक्ष्य प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर अमेरिका से ही पधारे चौधरी जयभगवान् जागलान ने जहाँ अपनी बहन श्रीमती लक्ष्मीदेवी की स्मृति में पाँच लाख रुपये मानव सेवा प्रतिष्ठान को स्थिरनिधि हेतु प्रदान किये, वहीं छात्र-छात्राओं के लिए आर्थिक सहयोग देते हुए एक ही उपदेश छात्र-छात्राओं को दिया—मेहनत, मेहनत, मेहनत। इसी के द्वारा आप अपनी उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकते हो। आचार्या सविता वेदालङ्कार (गुरुकुल हाथरस), आचार्य अञ्जलि आर्या (कन्या गुरुकुल पंचगाँव), आचार्या निशा आर्या (कन्या गुरुकुल हसनपुर, पलवल) एवं बहन संतोषबाला आर्या (भजनोपदेशिका गन्नौर, सोनीपत) आदि बहनों ने इस सम्मान को ऋषि दयानन्द की कृपा व आर्यसमाज के सिद्धान्तों का सम्मान बतलाया तथा उद्बोधन देते हुए कहा कि अगर ऋषि की कृपा नहीं होती तो नारियों को यह सम्मान उपलब्ध नहीं होता।

स्वामी जीवानन्द नैष्ठिक (महर्षि दयानन्द गोशाला, रनमौक, रेवाड़ी) ने सम्मान राशि गोशाला को दान रूप में प्रदान की तथा अपनी कविताओं के माध्यम से ऋषि का गुणगान किया व संस्था के अधिकारियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

—रामपाल शास्त्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल	6 से 10 नवम्बर 2013
2.	आर्यसमाज भाकली, जिला रेवाड़ी	9 से 10 नवम्बर 2013
3.	ओम् साधना मण्डल, करनाल	16 से 17 नवम्बर 2013
4.	आर्यसमाज भाण्डवा, जिला भिवानी	16 से 17 नवम्बर 2013
5.	कन्या गुरुकुल खरल, जिला जीन्द	7 से 8 दिसम्बर 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

महिला आर्यसमाज देसराज कालोनी पानीपत का 27वाँ पारिवारिक वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

महिला आर्यसमाज देसराज कालोनी पानीपत के तत्त्वावधान में पारिवारिक वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन दिनांक 4 अगस्त से 11 अगस्त सन् 2013 तक आयोजित किया गया। यह आयोजन प्रतिवर्ष अलग-अलग 14 परिवारों में किया जाता है जिससे अधिक से अधिक लोग वेदवाणी का श्रवण कर आर्य विचारधारा से लाभ उठा सके, आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाना हमारा लक्ष्य है।

दिनांक 11 अगस्त को समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ० बी.बी. शर्मा (प्राध्यापक आर्य महाविद्यालय) पानीपत ने की। श्री बृजकिशोर शास्त्री जी के निर्देशन में, निर्मला वसु, चन्द्रकान्ता वर्मा, दर्शना शर्मा एवं अरविन्द सैनी ने यज्ञ सम्पन्न किया। ध्वजारोहण श्री रणवीरसिंह जी आर्यवीर के करकमलों से हुआ। श्री इन्द्रजीत बत्रा, आत्मप्रकाश आर्य, नवनीत सिंगला, सुरेश पाराशर एवं सुमित्रा अहलावत ने दीपक की सप्त ज्योति प्रज्वलित कर **तमसो मा ज्योतिर्गमय** का संदेश दिया। राजस्थान से पधारे श्री ओमप्रकाश जी राघव भजनोपदेशक ने प्रभुभक्ति, देशभक्ति व महर्षि दयानन्द के यशगान से सभी को सराबोर कर दिया। प्रिं० स्वदेश कुमार शास्त्री ने संस्कृत एवं संस्कृति की रक्षा के लिये वेदों को अपनाने पर जोर दिया। आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री ने बल की महत्ता को दर्शाते हुए कहा हमारे पूर्वज बल की उपासना करते थे, बल से ही हमारे देश की स्वाधीनता अक्षुण्ण रह सकती है। डॉ. दर्शनलाल आजाद की ओजस्वी कविताएँ भी हुईं।

इस समारोह की मुख्य अतिथि नगर निगम पार्षद एवं डिप्टी मेयर श्रीमती सीमा पाहवा व श्री राजकुमार पाहवा रहे। विशिष्ट अतिथि डॉ. श्री नरेश पाहूजा व श्रीमती डॉ. वन्दना पाहूजा रहे। आर्यसमाज देशराज कालोनी के संस्थापक, संरक्षक पं० जगदीशचन्द्र वसु के सान्निध्य में माता विद्यावती सिंगला, ओमप्रकाश राघव भजनोपदेशक श्री सुरेश पाराशर, श्री राजकुमार पाहवा, श्री राजकुमार कम्बोज, श्री हरीश शर्मा निगम पार्षद का शॉल व ओम् पटके, स्मृति चिह्न आदि से सम्मान किया गया।

—निर्मला वसु, प्रधाना महिला आर्यसमाज पानीपत

आर्य-संसार

नारायणगढ़ (अम्बाला) में तीन दिवसीय वेदप्रचार यात्रा

नारायणगढ़ और उसके आसपास के क्षेत्र तीन दिनों 25, 26, 27 सितम्बर 2013 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य आचार्य बलदेव जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी का तथा भजनोपदेशक जसविन्द्र जी के साथ 'वेदप्रचार यात्रा' का आयोजन किया गया। 25 सितम्बर को प्रात: 8 बजे गांव बरौली की यज्ञशाला में स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा यज्ञ करवाया गया। गाँव के काफी लोगों ने इसमें भाग लिया। आचार्य जी और स्वामी जी का मधुर एवं प्रभावशाली उपदेश हुआ। युवासंन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी की बातों से लोग बड़े प्रभावित हुए भजनोपदेशक जसविन्द्र जी ने भी अपने मधुर भजन रखे। आर्यसमाज के प्रधान चौ० करनैलसिंह और मंत्री मास्टर ओमप्रकाश जी ने सभी का धन्यवाद किया। दोपहर 12 बजे आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नारायणगढ़ में कस्बे के सभी स्कूलों के अध्यापकों (संख्या लगभग 150) के सामने शिक्षा विशेषकर वास्तविक शिक्षा क्या है? और अध्यापक शिक्षण कार्य में बढ़-चढ़कर क्या सहयोग दे सकता है इस पर गोष्ठी में विचार विमर्श हुआ। कार्यक्रम 1.30 बजे तक चला।

रात्रि 8.30 से 10.30 बजे तक आर्यसमाज नारायणगढ़ में सभा हुई। नारायणगढ़ की आर्यसमाज के प्रधान डॉ. राजेन्द्र तायल, डॉ. विश्वबन्धु मंत्री मास्टर सुरेन्द्र कुमार, मा. रामनिरंजन तथा अन्य सम्मानित सदस्यों द्वारा पूज्य आचार्य जी, स्वामी जी का शाल ओढ़ाकर तथा वस्त्र भेंट कर भजन मण्डली एवं कुलदीप सिंह का स्वागत किया गया। सुन्दर भजन और उपदेश हुए।

26 सितम्बर को प्रात: शहजादपुर कस्बे में हवन-यज्ञ हुआ और आर्यसमाज शहजादपुर के ख़स्ता भवन पर विचार हुआ। आर्यसमाज शहजादपुर को दोबारा जीवित करने में सहयोग पर विचार विमर्श हुआ और योजना बनाई गई। दोपहर 3 से 5 बजे तक गांव बड़ागढ़ में सुन्दर कार्यक्रम हुआ। गाँव के लोगों ने सारे कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया। रात्रि गाँव बणौंदी में जनसभा हुआ। आर्यसमाज के युवा और बड़े लग्नशील मंत्री रघुवीरसिंह ने सारे कार्यक्रम का आयोजन करवाया लोग बड़े प्रभावित हुए।

27 सितम्बर को प्रात: बणौंदी के साथ लगते एक पब्लिक स्कूल में बड़ा अच्छा कार्यक्रम हुआ। स्कूल का सारा स्टाफ और बच्चों ने बड़ा आनन्द लिया। 11 बजे यमुनानगर जिले के गांव ठसका में यज्ञ हुआ और उपदेश हुए। गाँव के लोगों की श्रद्धा देखकर सभी गद्गद् हुए गाँव झंडा के श्री मलखानसिंह ने भी रास्ते में अपने घर पर बुलाया।

इसी दिन आचार्य जी ने क्षेत्र के गाँव हुसैनी में गोशालाओं के कार्यक्रम में भाग लेना था अत: कार्यक्रम यहीं समाप्त हो गया। इन दिनों धर्मचर्चा खूब हुई और वेदप्रचार कार्यक्रम भी सफल हुआ। —**रामनिरंजन आर्य**

शोक-समाचार

महाशय श्री महासिंह जी आर्य ग्राम-दुभेटा, जिला-सोनीपत का 17 अक्तूबर 2013 को अकस्मात् हृदयगति रुकने से स्वर्गवास हो गया। वे इस दिन तक स्वस्थ, स्वावलम्बी और क्रियाशील थे, उनकी आयु 84 वर्ष थी। महाशय जी बहुत स्वाध्यायशील, नित्य प्रभु उपासना करने वाले, पाखण्ड-विरोधी, सदाचारी एवं आदर्श व्यक्ति थे। उन्होंने अपने पुत्रों को भी सदाचारी बनाया और आर्यसमाज के प्रचारार्थ गुरुकुल अगवानपुर खुलवाया। उनके सुपुत्र आचार्य महेश आर्यसमाज के निष्ठावान् कार्यकर्त्ता हैं। उनके अंतिम संस्कार के दिन पूज्य आचार्य बलदेव जी और अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति पहुँचे। संस्कारविधि के अनुसार 100 किलो सामग्री, 60 किलो घी, पर्याप्त लकड़ियाँ (उपला एक भी नहीं) मन्त्रोच्चारण से आहुतियां देकर संस्कार किया। महाशय जी अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी शान्तिदेवी और श्री अनिल, श्री विनोद, श्री महेश, श्री मुकेश चार पुत्र एवं चार पुत्रियाँ, पौत्र-पौत्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। ऐसे उत्तम व्यक्ति के जाने से उनके आर्य परिवार को अपूरणीय क्षति हुई। उनके पुत्र उनकी अच्छाइयों को जीवित रखने के लिए संकल्पित हैं।

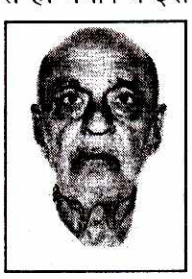

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जन्मोत्सव सम्पन्न

श्री सिद्धान्ती जी के जन्म-गांव बरहाणा (झज्जर) में उनकी स्मृति में बनाये गये श्री सिद्धान्ती स्मारक भवन के परिसर में स्थानीय आर्यसमाज द्वारा उनका जन्म-दिवस दशहरा पर्व के दिन दिनांक 13.10.2013 को धूमधाम से मनाया गया। प्रात: 9 बजे श्री सिद्धान्ती स्मृति यज्ञशाला में डॉ० राजपाल बरहाणा द्वारा बृहद्-यज्ञ सम्पन्न कराया गया। सभी यज्ञ में उपस्थित जनों ने इस संकल्प के साथ कि हम जीवन को सिद्धान्ती जी कीतरह श्रेष्ठ बनाने का यत्न करेंगे, यज्ञ की पवित्र अग्नि में आहुतियाँ अर्पित कीं। यज्ञोपरान्त श्री बुद्धदेव आर्य ने सिद्धान्ती जी के निर्भयतापूर्ण व संघर्षमय जीवन पर प्रकाश डाला तथा उन्हें एक आर्यसमाज का निर्भीक योद्धा बताया। तत्पश्चात् श्री जयपाल शास्त्री ने सिद्धान्ती जी द्वारा की गई आर्यसमाज की सेवाओं का उल्लेख करते हुये उनके जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन को उन्नत बनाने के लिए श्रेष्ठ पुरुषों की संगति के महत्त्व पर प्रकाश डाला। तदनन्तर प्राचार्य श्री हवासिंह ने सिद्धान्ती जी के समाज-सेवा के कार्यों का वर्णन करते हुये उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के संचालक डॉ० राजपाल ने सिद्धान्ती जी के समग्र जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पारिवारिक परिस्थितियां अनुकूल न होते हुये तथा आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थितियाँ भी प्रतिकूल होते हुये सिद्धान्ती जी ने अथक संघर्ष एवं अपनी कुशाग्र बुद्धि-बल से अपने आपको समुन्नत कर विद्वत्समाज में अपना स्थान बनाया तथा सामाजिक एवं राजनीतिक-सेवा क्षेत्र में भी अपना अग्रगण्य स्थान बनाया। उन्हें वास्तविक श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उन्हें स्मरण रखते हुये, उनके श्रेष्ठ जीवन से प्रेरित होकर अपने आपको श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करें तथा अन्यों को शुभ कर्मों को अपनाने की प्रेरणा दें। शान्तिपाठ से पूर्व श्री सिद्धान्ती स्मृति आयुर्वेदिक नि:शुल्क धर्मार्थ औषधालय बरहाणा के वैद्य श्री सुखीराम जी आर्य ने ईश्वर भक्ति का एक गीत प्रस्तुत किया तत्पश्चात् शान्तिपाठ एवं वैदिक जयघोष के साथ श्री सिद्धान्ती जन्मोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तदनन्तर आर्यसमाज बरहाणा के प्रधान श्री हरपाल जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज बरहाणा की एक आवश्यक बैठक हुई जिसमें श्री सिद्धान्ती जी की स्मृति में चलाये जा रहे सभी प्रकल्पों की विवेचना की गई। **मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर)**

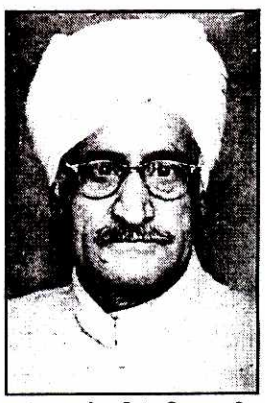

पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती

कबर पूजा की सच्चाई : देशवासियो!... पृष्ठ 2 का शेष....

झील, पर्वत पहाड़ हों सभी जड़ पदार्थ एक ही श्रेणी में आते हैं। जो लोग सोचते हैं कि इनके कारण उनकी मन्नतें पूरी हो जाएँगी, उनके ऊपर तो तरस ही खाया जा सकता है। एक चेतन परमात्मा की उपासना से ही मनुष्य के दु:ख दूर हो सकते हैं। लौकिक कामनाओं की पूर्त्ति के लिए भी परमात्मा के साहाय्य के साथ पुरुषार्थ भी करना आवश्यक है।

आज धार्मिक विश्वास या आस्था के प्रश्न के नाम पर इस प्रकार के अंधविश्वास दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। प्रचार माध्यमों की कृपा से इनका क्षेत्र लगातार विस्तृत हो रहा है। सरकारों की उदासीनता या प्रोत्साहन से आंख के अंधे गांठ के पूरे लोग अपने धन और समय की बरबादी कर रहे हैं। सरकार पाठ्यक्रमों में और प्रचार माध्यमों से इस संबंध में जागरूकता कार्यक्रम चलाए तो इस पर कुछ अंकुश लग सकता है। पर आज की राजनीति के संदर्भ में शासन से तो यह आशा रखी नहीं जा सकती। क्योंकि इस प्रकार के अंधविश्वास किसी न किसी धार्मिक वर्ग से जुड़े होते हैं और सरकार किसी धार्मिक वर्ग को नाराज करने का खतरा नहीं उठा सकती।

यह काम तो जागरूक सामाजिक संस्थाएँ विशेषकर आर्यसमाज ही कर सकता है।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

गोतस्करों की धरपकड़ के लिए पुलिस हमेशा तत्पर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (27 सितम्बर, 2013)। गोतस्करों से गायों की रक्षा करने के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में बैठक आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता कुरुक्षेत्र के डीएसपी निर्मल सिंह ने की। गोरक्षा टास्क फोर्स के संयोजक कुरुक्षेत्र डीआई संजीव कुमार के नेतृत्व, गोसेवा आयोग के सदस्य आचार्य देवव्रत प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र व जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड के सदस्य कुलवीरसिंह के सहयोग से आयोजित इस बैठक में विभिन्न गोसंस्थानों के प्रमुख लोगों ने भाग लिया। गाय किसान के लिए ही नहीं, अपितु पर्यावरण के लिए वरदान है। आचार्य देवव्रत ने कहा कि गाय की रक्षा करना व संवृद्धि करना हर भारतीय का परम कर्त्तव्य हैं। हरियाणा कृषि प्रधान राज्य है और इसके लिए गाय का महत्त्व सर्वाधिक है। अत: गाय की रक्षा शत-प्रतिशत होनी ही चाहिए। गोरक्षा सेवा दल हरयाणा कुरुक्षेत्र के जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र गोयल ने गाय की रक्षा में आने वाली बाधाओं को उपस्थित पुलिस अधिकारियों के समक्ष रखा। उन्होंने कहा कि कई बार पुलिस का सहयोग प्राप्त होता है, लेकिन कई बार ऐसी घटनाएँ भी हो जाती हैं कि हमें पूरी तरह से पुलिस का सहयोग नहीं मिल पाता। इस समस्या का समाधान बताते हुए संजीव कुमार ने कहा कि आपको यदि सूचना समय रहते प्राप्त हो जाती है तो तुरन्त उसकी सूचना 100 नम्बर पर दें और यदि कार्यवाही नहीं होती है तो आप मुझे सूचित करें तत्काल टास्क फोर्स के माध्यम से गोतस्करों को पकड़ने का प्रबन्ध किया जायेगा। डीएसपी निर्मलसिंह ने कहा कि जो भी समस्यायें आपके सामने आती हैं और यदि उसका समाधान नहीं होता है तो उसका हल उचित तरीके से किया जाये।

आचार्य देवव्रत ने कहा कि इन समस्याओं का समाधान मिल बैठकर ही खोजा जा सकता है। जनता को जागरूक करना भी उतना ही आवश्यक है। आमजन को जागरूक किये बिना हमारे पास गोरक्षा का ठोस आधार नहीं बन पायेगा। केशवा सिंगला महासचिव गोरक्षा सेवा दल कुरुक्षेत्र ने कहा कि हम सभी अपनी गोमाता की रक्षा के लिए तत्पर हैं। हरभजन सिंह खण्ड प्रमुख शाहाबाद ने कहा कि गाड़िया लुहारों की तरफ से ज्यादा शिकायतें आ रही हैं। वे दिन में बैल खरीदते हैं व तीन-चार दिन अपने पास रखते हैं और बाद में गोतस्करों को बेच देते हैं। इस ओर भी प्रशासन को ध्यान देना होगा।

डीआई संजीव कुमार ने सभी गोरक्षा सेवा दल के सदस्यों को कहा कि वे अपने पास अपनी संस्था द्वारा जारी पहचान-पत्र साथ रखें, ताकि कोई गलत आदमी गलत फायदा न उठाये और यदि कोई गलत आदमी इसमें शामिल हो तो उसकी की भी सूचना दी जाये। उन्होंने कहा कि मेरे क्षेत्र में आने वाले स्थानों पर यदि कोई इस प्रकार की सूचना हो तो हम हमेशा आपके साथ तत्पर रहेंगे। मथाना गोशाला के प्रबन्धक स्वामी सत्यानन्द ने कहा कि गोतस्कर अलग-अलग तरीके अपना रहे हैं उनसे चौकसी बरतना आवश्यक है। गोतस्कर पहले सूचनाएँ जुटाते हैं व बाद में अपने काम को अंजाम देते हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस गस्ती दल को इस ओर ध्यान देना होगा। कुलवीर सिंह सदस्य जीवजन्तु कल्याण बोर्ड ने सभी आये हुए महानुभावों, पुलिस प्रशासन व आचार्य देवव्रत का आभार ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि प्रशासन की ओर से जिस प्रकार सहयोग मिल रहा है वैसे ही आगे भी मिलता रहेगा।

देश के चार महान् राजनीतिज्ञ.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

बनाया। सरदार पटेल की विलक्षण बुद्धि, दृढ़ निश्चय, अपरिमित साहस, संगठन शक्ति को देखकर ही जनता ने उन्हें लौहपुरुष की उपाधि से विभूषित किया। सरदार पटेल एक ऐसा दृढ़ विश्वासी व्यक्ति था जिसने जो काम करना ठान लिया, उसे पूरा करके ही रहा। अंग्रेजों ने हमें 15 अगस्त 1947 को आजादी तो जरूर दी परन्तु वह अधूरी आजादी थी। उस अधूरी आजादी को पूर्ण आजादी में परिवर्तित करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। अंग्रेज जब भारत छोड़कर गये थे, तब भारत में 562 देशी रियासतें व रजवाड़े थे। से सभी को स्वतन्त्र छोड़कर गये थे। वे तो यही उम्मीद रखकर गये थे कि 562 रियासतों व रजवाड़ों को भारत कभी भी नहीं मिला सकेगा और परस्पर लड़ाई-झगड़ा चलता रहेगा जिससे देश में अशान्ति बनी रहेगी। अन्त में हम ही आकर राज्य सम्भालेंगे, पर सरदार पटेल ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। पटेल जी ने इतनी होशियारी व चातुर्य से सब राजाओं को समझाकर, डराकर या किसी से युद्ध करके सबको भारत में मिला लिया। जूनागढ़ व ग्वालियर महाराजा ने कुछ आना-कानी की थी, परन्तु उनको समझा-बुझाकर मना लिया। केवल हैदराबाद का बादशाह नहीं मिलना चाहता था। उनको भी सेना भेजकर चार घण्टों में ही भारत में मिला लिया। अब केवल काश्मीर की एक समस्या रह गई।

जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी, तब वहाँ का राजा हरिसिंह दिल्ली आकर पटेल जी से सन्धि कर ली, तब पटेल जी ने काश्मीर पर चढ़ाई कर दी और दो तिहाई हिस्सा काश्मीर का जीत भी लिया, तभी नेहरू जी ने बीच में टांग लगाकर सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया और काश्मीर की समस्या को जहाँ की तहाँ रखकर कैस को U.N.O. (राष्ट्रसंघ) में दे दिया, जिससे आज भी काश्मीर का एक-तिहाई हिस्सा शिरदर्द बना हुआ है। यदि नेहरू जी टांग नहीं लगाते तो काश्मीर की समस्या भी हल हो गई होती और आज भारत विश्व के मजबूत और सुदृढ़ देशों में गिना जाता। आज हमें पाकिस्तान जैसा छोटा देश भी आँख दिखा सकते थे और भारत एक सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में खड़ा हुआ दीखता और हम सभी भारतवासी सुख और आनन्द की नींद सोते।

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) का 49वां वार्षिक उत्सव 5-6 अक्तूबर 2013 को बड़े धूमधाम से मनाया गया। 2 ता० से 6 तारीख तक अथर्ववेद के मन्त्रों से यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विश्वानन्द (मथुरा) वाले थे। यज्ञ पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही समेत कई दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। कई सज्जनों ने यज्ञोपवीत धारण किया। सब कार्यक्रम का संचालन वैदिक विद्वान् आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर ने किया। प्रतिदिन स्वामी विश्वानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। यज्ञ के बाद गुरुकुल आर्यनगर के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द ने ध्वजारोहण किया।

5-6 अक्तूबर को उत्सव पर स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी विश्वानन्द, महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, सभाप्रधान आचार्य विजयपाल, सभा संरक्षक आचार्य बलदेव, डॉ० सत्यवीर विद्यालंकार, वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य आदि ने आत्मा-परमात्मा, संस्कारों का महत्त्व, राष्ट्ररक्षा, गोरक्षा, नारीशिक्षा, सुखी गृहस्थ, शराबबन्दी आदि पर सारगर्भित विचार रखे। महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर पं० राजीव कुमार शास्त्री, राजकुमार आर्य, राधेश्याम आर्य, लालबहादुर एडवोकेट, कर्नल ओमप्रकाश आदि ने विचार रखे।

उत्सव में राजनेताओं में कुमारी शैलजा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री भारत सरकार ने आर्यसमाज की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मंत्री महोदया ने श्री ईश्वरसिंह सांसद राज्यसभा से 15 लाख का सहयोग करवाया, साथ में उकलाना हल्का के विधायक श्री नरेश शेरवाल से 6 लाख की घोषणा करवाई। श्री भूपेन्द्र गंगवा ने 21 हजार देने की घोषणा की, श्री शीशपाल महलान ने 21 हजार रुपये नागोरी गेट की ओर से देने की घोषणाकी, श्री बदलुराम आर्य ने भी आर्यसमाज की ओर से 21 हजार रुपये देने की घोषणा की, श्री रामकुमार आर्य, सेठ सत्यप्रकाश आर्य, ब्र० दीपकुमार आदि ने एक-एक पीपा घी देने की घोषणा की। आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनो-पदेशक पं० रामनिवास आर्य, पं० उदयवीर (उ०प्र०), श्री नारायण शास्त्री नजफगढ़ के प्रसिद्ध समाज-सुधार के भजन हुये तथा श्री कैलाशचन्द्र आर्य अध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, की देखरेख में प्रेरणादायक व्यायाम प्रदर्शन हुआ। ब्र० राकेश कुमार ने अपनी छाती पर पत्थर तुड़वाया व टीप तोड़ी तथा मलखम्भ पर युवकों ने शानदार खेल दिखाया। लोगों ने खूब सराहा। दिल खोलकर युवकों को दान दिया।

—मा० दिलबागसिंह आर्य उमरा,
उपमंत्री वेदप्रचार मण्डल (हिसार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।